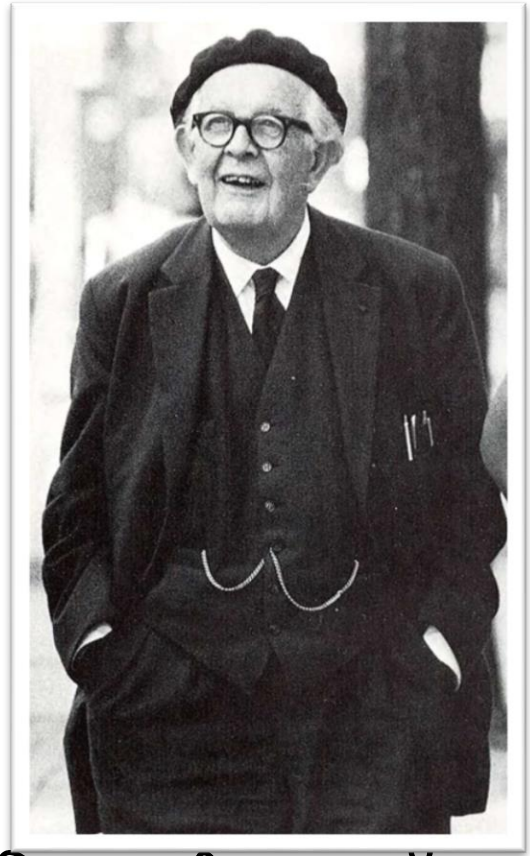

# पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

Dr Iti Banerjee
Assistant Professor
Education Department
Durga Mahavidyalaya

# पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

## ** संवेदनात्मक–गामक अवस्था **

यह अवस्था जन्म के उपरान्त प्रथम दो वर्षों तक चलती है। इस अवस्था में शिशु असहाय जीवधारी से गतिशील जीव बन जाता है। वह देखने, पहुंचने, सुनने आदि की सहज क्रियाओं से व्यवस्थित प्रयासरत क्रियाओं की ओर स्वतः ही अग्रसर होता है। इसमें शिशु अर्ध्दभाषी तथा सामाजिक दृष्टि से चतुर बन जाता है। प्रयास व त्रुटि के आधार पर अपनी परिस्थितियों को समझने का प्रयास करता है। लगभग डेढ़ वर्ष की आयु में बालक कुछ करने से पहले सोचना आरम्भ करता है। प्रारम्भ में वे वह अनुकरण करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है किन्तु बाद में वह अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है। इस अवस्था में बौध्दिक संरचनाओं के पूर्ण विकास के बाद वह संज्ञानात्मक विकास की दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है।

## ** पूर्व क्रियात्मक अवस्था **

व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास की यह द्वितीय अवस्था (**01 से 07 वर्ष**) भाषा अधिगम की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। इसमें भाषा का प्रयोग प्रारंभ हो जाता है। इस अवस्था को दो भागों में विभक्त किया जाता है।

**(I) पूर्वप्रत्ययात्मक काल**–पूर्व प्रत्ययात्मक काल **दो से चार वर्ष** तक होता है। यह अवस्था मुख्यतः परिवर्तन की अवस्था है। जिसे खोज की अवस्था भी कहा जा सकता है। इसमें शिशु विभिन्न घटनाओं या कार्यों के बारे में प्रश्नवाचक वाक्य बोलने लग जाता है। प्रष्नों का उत्तर जानने में रूचि रखता है। क्यों, कैसे, कही, कब आदि शब्दों का प्रयोग करता है बड़ों के कार्यों का अनुसरण करता है बहुत ही तीव्रगति से इस अवस्था में ही भाषा का मौखिक विकास होता है, जिससे निम्नांकित तथ्यों से जाना जा सकता है।

- दो वर्ष का बालक लगभग 200 शब्दों को समझ लेता है।

- छः वर्ष का बालक लगभग **16000** शब्दों को समझ लेता है।
- दो वर्ष का बालक दो व तीन शब्दों के वाक्य बोल लेता है जो व्याकरण की दृष्टि से प्रायः अशुद्ध व अपूर्ण होते है।
- तीन वर्ष का बालक लगभग आठ–दस शब्दों के वाक्य बोलने लगता है जो व्याकरण की दृष्टि प्रायः शुद्ध होते हैं। पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में ही भाषा का अधिकतम विकास होता है। अच्छे तथा समृद्ध भाषायी वातावरण में बालक को भाषायी विकास करने के अधिक अवसर मिलते है।

**(II) आंतप्रज्ञ काल**—लगभग **पांच वर्ष से सात वर्ष** तक बालक आन्तप्रज्ञ चिन्तन की अवस्था में होता है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बालक बिना किसी तार्किक विचार प्रक्रिया के किसी वस्तु या बात को मस्तिष्क द्वारा तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। बालकों के लिए विभिन्न पक्षों के मध्य संबंध या तालमेल बैठना कठिन होता है। पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था के इस आन्तप्रज्ञ चिन्तन काल में बालक के खेल अधिकाधिक सामाजिक होते है। वे प्रायः पोस्टमैन, अध्यापक, पुलिसमैन, डॉक्टर, वकील, नेता जैसी सामाजिक भूमिकाओं का अनुकरण करते है। इन पात्रों के अभिनय करते हुए इनसे सम्बन्धित शब्दावलियों को सीख जाते है। वे अपने परिवार से बाहर के व्यक्तियों को महत्व देने लगते है।

# ** मूर्त संक्रियात्मक अवस्था **

**सात से बाहर वर्ष** तक की इस अवस्था में बालक का पूर्व संक्रियात्मक अवस्था अतार्किक चिन्तन मूर्त संक्रियात्मक विचारों का स्थान लेने लगता है। बालक छोटे–छोटे विलोमीय पदों की श्रृंखला द्वारा विचार करने लगता है। मूर्त वस्तुओं के सम्बन्ध में अनेक विभिन्न प्रकार की तार्किक संक्रियाएँ करने लगता है। इस अवस्था में बालक तीन प्रकार की निम्नलिखति गुणात्मक मानसिक योगयताओं में पर्याप्त निपुणता प्राप्त कर लेता है।

**(1) विचारों की विलोमीयता**

**(2) संरक्षण**

**(3) कमबद्धता व पूर्ण अंष प्रत्ययों का उपयोग**

- बालक विचारों की विलोमयिता में निपुण हो जाते है।
- भौतिक वस्तुओं में संरक्षण बालकों की विचार प्रकिया का एक स्वाभाविक अंग बन जाता है।
- इस अवस्था (तीसरी महत्वपूर्ण ज्ञानात्क क्षमता) में बालक कमबद्ध एवं अंर्थपूर्ण प्रत्ययों का प्रयोग करने लगता है। कमबद्धता से तात्पर्य है। विभिन्न वस्तुओं की उनकी किसी विषेश्ता जैसे आकार, भार आदि की दृष्टि से कमबद्ध करने से है। बालक की आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति कम होने लगती है तथा बाह्य जगत को महत्व देते हुए उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करने लगता है।

# ** औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था **

संज्ञानात्मक विकास की अन्तिम अवस्था औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था है जो लगभग **11 से 15 वर्ष** आयु तक विकसित होती है। इस अवस्था में बालक अमूर्त बातों के संबंध में तार्किक चिन्तन करने की योग्यता विकसित करता है। इसके अंतर्गत मूर्त वस्तुओं व सामग्री व सामाग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसमें समस्या, समाधान, व्यवहार अधिक व्यवस्थित होने लगता है, यथा

- बालक निष्कर्ष निकालने लगता है।
- व्याख्या करने लगता है।
- परिकल्पनाएँ बनाता है।
- भावी संभावनाओं पर तर्क करने लगता है।
- वास्तविकता से बाहर सोचने लगता है।
- एक साथ अधिक से अधिक तथ्यों को समझने में स्थान देने लगता है।
- अधिकाधिक दृष्टिकोणों को अपनी विचार प्रक्रिया में स्थान देने लगता है।
- स्वयं को आलोचना करने में समक्ष होने लगता है।

संज्ञात्मक विकास में उपर्युक्त चारों अवस्थाएँ क्रमशः जटिल होती जाती है। कुछ बालकों का बौद्धिक विकास कुछ तीव्र गति से कुछ का औसत गति से व कुछ का मन्द गति से होता है। विकास की कोई भी अवस्था एकदम समाप्त नहीं हो जाती, अपितु धीरे–धीरे एक अवस्था से दूसरी में प्रविष्ट होती रहती है।

''जीन पियाजे के अतिरिक्त अमेरिका के जेरोम ब्रूनर ब्लूमफील्ड तथा नोम चाम्स्की ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण शोध किए है।''

(1) अमेरिका के मनोवैज्ञानिक जेरोम ब्रूनर ने संज्ञानात्मक विकास के एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है जो पियाजे के सिद्धान्त का विकल्प माना गया है। ब्रूनर ने संज्ञानात्मक विकास की तीन अवस्थाएॅ बताई है–

(I) **क्रियात्मक अवस्था**–क्रियात्मक अवस्था में बालक अपने वातावरण को क्रिया प्रणाली से समझने का प्रयास करता है। जैसे– हाथ–पैर चलाना, चलना आदि। इसमें भाषा का महत्व नहीं होता मनोचालक ज्ञान महत्वपूर्ण होता है।

(II) **प्रतिबिम्बात्मक अवस्था**–प्रतिबिम्बात्मक अवस्था में मानसिक प्रतिबिम्बों के द्वारा सूचनाएॅ बालक तक पहॅुचती है। बालक चमक, शोर, गति तथा विविधता से प्रभावित होता है। बालकों में दृश्य स्मृति विकसित होता है। ब्रूनर की यह अवस्था पियाजे की पूर्ण संक्रियात्मक अवस्था के समकक्ष है।

(III) **संकेतात्मक अवस्था**–संकेतात्मक अवस्था में बालक की क्रियात्मक तथा प्रत्याक्षीकृत समझ का प्रतिस्थापन संकेत प्रणाली से हो जाता है। बालक भाषा, तर्क आदि सीख लेता है। संकेतों के प्रयोग से बालाकें की संज्ञात्मक कार्यक्षमता बढ़ जाती है। जटिल अनुभवों तथा विचारों को संक्षिप्त कथनों व सूत्रों में प्रस्तुत करने की योग्यता विकसित होती है।

(2) ब्लूम फील्ड के अनुसार भाषा के संज्ञानात्मक विकास में सामान्य बुद्धि बालक में प्रकृति प्रदत्त रूप में सुलभ होती है। उपयुक्त वातावरण में मूल प्रयोक्ताओं के बीच बालक जटिल से जटिल भाषा सहज ही सीख लेता है।

(3) नोम चॉम्स्की के सिद्धान्तों के अनुसार मानव मस्तिष्क में भाषार्जन हेतु पूर्व निहित क्षमताएॅ होती है। मस्तिष्क की मूलभूत प्राप्त संरचनाओं की अन्तः क्रियाओं से ही भाषा ज्ञान परिगणित होता जाता है।

**निष्कर्ष -** **<u>चॉम्स्की के अनुसार</u>**–एक शिशु प्रथम शब्द के उच्चारण से पूर्व ही भाषा के सिद्धान्तों को समझता है। भाषा सीखनी पड़ती है पर उसके व्याकरण को सीखने के लिए बालक मस्तिष्क में निहित क्षमताओं और संरचनाओं का उपयोग करता है।

..........